4

# शिक्षागत निवेश बनाम क्षमताओं का विकास

भूपेन्द्र सिंह*
पतंजलि मिश्र**

मनुष्य की उच्च मानसिक क्रियाएँ साहचर्य क्रियाओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती हैं (वायगोत्स्की, 1962)। अतः सीखने का सटीक मंत्र यह है कि हज़ार असफलताओं के बावजूद अगले हर प्रयास के लिए बेझिझक, बिना थके और बिना हारे तैयार रहना। दरअसल शिक्षा में बदलाव की उम्मीदें तब दम तोड़ने लगती हैं, जब बच्चों की भागीदारी को अनदेखा किया जाने लगता है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में यह स्पष्ट किया गया है कि बच्चा स्वयं ज्ञान का सृजन करता है। इसका निहितार्थ है कि पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें, शिक्षक को इस बात के लिए सक्षम बनाएँ कि वे बच्चों की प्रकृति और वातावरण के अनुरूप कक्षायी अनुभव आयोजित करें, ताकि सभी बच्चों को अवसर मिल पाएँ। शिक्षण का वास्तविक उद्देश्य बच्चे के सीखने की सहज इच्छा और युक्तियों को समृद्ध करना होना चाहिए। यह लेख बच्चों की क्षमताओं का विकास करने हेतु प्राथमिक स्तर पर शिक्षागत निवेश के तरीकों को साझा करने का एक प्रयास है।

प्रत्येक बच्चे में स्वयं की दुनिया को समझने के लिए आंतरिक जिज्ञासा तो होती ही है, इसीलिए वह स्वतंत्र रूप से स्वयं को सक्षम बनाने के लिए हर संभव प्रयास भी करता है। परंतु व्यक्तिगत, सामाजिक और विपरीत आर्थिक परिस्थितियाँ उसकी समझ और जिज्ञासा को कमज़ोर करने का कारण बनती हैं। जो शिक्षा बच्चे की जिज्ञासा, समझ, रुचि, क्षमता और अभिवृत्ति विकसित करने के साथ ही ज्ञान में बढ़ोतरी करे वही सार्थक और समर्थ शिक्षा है। भविष्य को ध्यान में रखते हुए वर्तमान शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए कि सीखने वाला अपने आस-पास के परिवेश को बेहतर तरीके से समझ सके, स्वयं को उस परिवेश में समायोजित कर स्वयं का विकास कर सके और अपनी रुचियों के अनुसार विभिन्न कौशलों का उपयोग कर उस परिवेश की वास्तविक समस्याओं को सुलझाने के प्रयास कर सके।

लेकिन कई बार ऐसा भी देखा जाता है कि परिवार और समाज बच्चे पर सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों तथा परंपराओं, सामाजिक नियमों आदि को सीखने की प्राथमिकता पर ज़्यादा ज़ोर देते हैं। ऐसा

* *वरिष्ठ शोध अध्येता*, शिक्षा विद्यापीठ, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान 324010
** *सहायक आचार्य*, शिक्षा विद्यापीठ, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान 324010

करना समाजीकरण की एक तय सीमा तक तो सही है। लेकिन बच्चों को सर्वप्रथम तो स्वयं को जानने, अपनी आवश्यकताओं, रुचियों एवं क्षमताओं को पहचानने और बिना किसी बंधन के अपनी शिक्षा एवं कार्य के चयन की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए जिससे वे वैश्विक समाज का भला कर सकें।

साधारणतः बच्चों के सामाजिक विकास का उत्तरदायित्व हमेशा से परिवार, समुदाय और समाज पर रहा है। लेकिन बदलते परिप्रेक्ष्य में विद्यालयों को भी लघु समाज की भूमिका में आने के प्रयास करने की आवश्यकता है। शायद इसीलिए ही जॉन ड्यूवी ने भी विद्यालय को समाज का लघु प्रारूप और प्रतिबिंब (ड्यूवी, 1915, पृ.15) कहा है।

बड़ों के मुकाबले बच्चों की अवलोकन और अनुभूति में अधिक गहराई होती है। ज्ञान के सृजक के रूप में उनकी संभावनाओं की हमें अधिक समझ होनी चाहिए (*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, पृ. vi)। शिक्षा आयोग (1964–66) के द्वारा बुनियादी शिक्षा के श्रेष्ठतम तत्त्वों को सम्मिलित करते हुए शिक्षा को राष्ट्र के जीवन, आवश्यकताओं और आकांक्षाओं से संबद्ध करने के लिए उसके आंतरिक परिवर्तन पर अधिक बल दिया गया है (रा.शै.अ.प्र.प., 1976, पृ. 1)।

## कक्षा-कक्ष में शिक्षण एवं अधिगम को समझना

कक्षा एक आकृतिहीन, उत्सुक एवं असंगत विचारों का स्थान है। इसीलिए अलग-अलग तरीकों से विचारों के विस्तार और संकुचन (expanding and contracting) का दबाव शिक्षक पर हमेशा बना रहता है। शैक्षिक शोधकर्ताओं का यह मत है कि शिक्षण और अधिगम, कक्षा संदर्भों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इससे दूर समस्त प्राणी जगत और उसके साथ होने वाली क्रियाओं से जुड़ा हुआ है (होप्पिट व अन्य, 2008)। एक औपचारिक कक्षा, व्यवस्था के भीतर होने वाली निर्देशपरक शिक्षा की प्रकृति, बच्चे के स्वयं के सांस्कृतिक सदंर्भ में रोज़मर्रा के जीवन के हिस्से के रूप में प्राप्त शिक्षा की प्रकृति से काफ़ी अलग होती है (वायगोत्स्की, 1962)।

मसॉ (1979) व्यक्त करते हैं कि ऐतिहासिक रूप से कक्षाओं का कार्य असफल शिल्पियों और किसानों के बच्चों के नैतिक चरित्र में सुधार करना था। समय परिवर्तन के साथ समान आयु और क्षमताओं के बच्चों को साक्षर करने एवं संख्यात्मकता के बुनियादी कौशल हासिल करने के साथ गरीब वर्ग के बच्चों का जीवन बेहतर करने और उच्च वर्गों के बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना हो गया। सूचना प्रौद्योगिकी और ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों के विकास के कारण आज की कक्षाएँ आभासी हो गई हैं। परंतु आज भी ये दुनिया भर में एक व्यापक सांस्कृतिक समागम के लिए पूर्णत: तैयार नहीं हैं। इसलिए स्थानीय सदंर्भ के साथ संगति बैठाते हुए पाठ्यचर्या परिवर्तन में बहुलता तथा सांस्कृतिक विविधता का मान देना अनिवार्य हो जाता है (पाठ्यचर्या बदलाव के लिए व्यवस्थागत सुधार, आधार पत्र रा.शै.अ.प्र.प., 2008, पृ. vi)। समस्याओं के समाधान में स्थानीय निकाय सबसे अधिक संसाधन युक्त हैं (पाठ्यचर्या बदलाव के लिए व्यवस्थागत सुधार, आधार पत्र रा.शै.अ.प्र.प., 2008, पृ. 24)। भारतीय सदंर्भ

में विद्यालय एक ऐसी संस्था के तौर पर लिया जाता है, जो विभिन्न प्रकार के सामाजिक और सांस्कृतिक भेदभाव से बचाए रखने और जो नई पीढ़ी के संसाधनों और सांस्कृतिक पूँजी में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने में सक्षम है (पाठ्यचर्या बदलाव के लिए व्यवस्थागत सुधार, आधार पत्र रा.शै.अ.प्र.प., 2008, पृ. 3–4)।

एक दूसरा पहलू जिसमें कक्षाओं को चुनावी मैदान के रूप में समझा जाने लगा है। सामाजिक क्रियाओं के फलस्वरूप उपजी असंख्य विरोधाभासी माँगों से शिक्षा प्रणाली और शिक्षण पेशा इस कदर प्रभावित हुआ है कि बच्चों और शिक्षकों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी का वास्तविकताओं के साथ कोई सरोकार नहीं रहा है।

बच्चे और शिक्षक दोनों ही, कक्षा में अपने-अपने विशिष्ट अनुभवों के साथ प्रवेश करते हैं, जो एक-दूसरे को सीखने और सिखाने के कार्यों को आकार देते हैं। ऐसे में बच्चों की क्षमताओं का विकास करने के लिए शिक्षक की व्यवहार शैली बच्चों की रचनात्मकता को पोषण प्रदान करने वाली होनी चाहिए।

## बच्चों में सीखने की प्रक्रिया को समझना

प्रसिद्ध शिक्षा विद्वान जॉन होल्ट ने अपनी पुस्तक *हाऊ चिल्ड्रन लर्न* में लिखा है कि विद्यालय में प्रवेश से पूर्व ही बच्चे अपनी स्वयं की खोजों और प्रयोगों से सीखने का एक मॉडल रच चुके होते हैं। यह मॉडल बिल्कुल जीन पियाजे (1952) द्वारा वर्णित 'स्कीमा' (Schema) के विकसित होने जैसा है, जो कि थॉर्नडाइक के 'अभ्यास और त्रुटि' (Trial and Error) के फलस्वरूप विकसित होता है। महात्मा गांधी ने *हरिजन* (1 दिसंबर 1933) समाचार पत्र में लिखा कि सही शिक्षा तो छात्र-छात्राओं में अंतर्निहित सर्वोत्तम गुणों को प्रकाशित करना है। केवल अव्यवस्थित और अवाँछित सूचनाएँ विद्यार्थियों के दिमाग में भर देने से ऐसा कभी नहीं हो सकता। यह तो उनके मन पर निष्प्राण बोझ बन कर उनकी समग्र मौलिकता को नष्ट कर देता है और उन्हें यंत्रवत बना देता है (*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000*)। जबकि बच्चे सक्रिय गतिविधियों के ज़रिए अपने आस-पास की दुनिया को समझने की कोशिश करते हैं। इसलिए प्रत्येक साधन का उपयोग इस तरह किया जाना चाहिए कि बच्चों को खुद को अभिव्यक्त करने में, वस्तुओं का इस्तेमाल करने में, अपने प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश की खोजबीन करने में और स्वस्थ रूप से विकसित होने में मदद मिले (*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, पृ. viii–ix)।

महात्मा गांधी की 'बुनियादी शिक्षा योजना' (वर्धा शिक्षा योजना) का समर्थन भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार बच्चे के स्वयं के काम करने के माध्यम से उसके मस्तिष्क का विकास करना था। जिसमें शरीर, मन और आत्मा के विकास के साथ जीवनोपयोगी एवं रोज़गारपरक कौशलों को सिखाने पर ज़ोर दिया जाता था। शिक्षण में इस तरह की तब्दीली की जानी चाहिए कि यह हर बच्चे को अपने रोज़ के अनुभवों को जाँचने और उनका विश्लेषण करने में सक्षम बनाए (*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, पृ. x) भले ही बच्चा बार-बार गलती ही क्यों न करे। उदाहरण के लिए, जब लिखने की पद्धति अनजान थी तब वेदों को मौखिक रूप से याद करने की परंपरा थी।

ऐसे में मंत्रों या पदों के उच्चारण और विभिन्न पाठों या क्रमों को याद रखने के लिए एक के बाद एक उच्चारित करने की तकनीक अपनायी जाती थी, ताकि मंत्रों या पदों को दीर्घकाल तक याद रखा जा सके (रा.शै.अ.प्र.प., 2009, पृ. 3)। हेनरी फोर्ड का कथन है कि 'वास्तविक त्रुटि वही है जिससे हम कुछ भी नहीं सीखते' (शालेंबर्गर, 2015, पृ. 248)। इसीलिए परिवेश संबंधी सरोकारों और चिंताओं पर हर विषय में ज़ोर दिए जाने की ज़रूरत है (*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, पृ. x)।

## बच्चों के सीखने के अनुभवों का पोषण

एक शिक्षक को बच्चों को पुस्तकालय में लगी प्रदर्शनी में लगे चित्रों पर ध्यान केंद्रित कराते हुए यह कहते सुना "देखो बच्चों, यह है रेगिस्तान का जहाज — ऊँट और जहाज पानी में चलता है।" यहाँ शिक्षक के विषयगत ज्ञान पर कोई संदेह व्यक्त नहीं किया गया है। बल्कि यह बताने का प्रयास है कि प्रारंभिक स्तर पर बच्चों के अनुभवों को पोषित करने के लिए समग्रता का ज्ञान दिया जाए। जैसे स्पष्ट उदाहरण इस प्रकार होना चाहिए — "देखो बच्चों, यह है ऊँट और ऊँट के शरीर की बनावट के कारण बहुत दिनों तक रेगिस्तान में बिना पानी के रहने तथा पैर गद्दीदार होने के कारण और रेगिस्तान में तेज़ दौड़ने की क्षमता के कारण इसे 'रेगिस्तान का जहाज' भी कहा जाता है। जबकि लोहे और लकड़ी से बना जहाज पानी में चलता है।" दरअसल पाठ्यपुस्तकों में छपे हुए चित्रों पर कक्षा-कक्ष एवं पीयर ग्रुप में की गई चर्चा बच्चों को भाषा का इस्तेमाल करने का एक अच्छा अवसर प्रदान करती है। भले ही बच्चे न पूछें, लेकिन फिर भी शिक्षक को पुस्तक पकड़ने से लेकर वाक्यों को पढ़ने की दिशा और पुस्तक में छपे चित्र का विषय-वस्तु से संबंध बताने का प्रयास करना चाहिए। इसीलिए *दस वर्षीय स्कूल के लिए पाठ्यक्रम — एक रूपरेखा* में कार्यानुभव को विद्यालयी शिक्षा की केंद्रीय विशेषता के रूप में रखने का प्रस्ताव किया गया। जिसमें कार्यानुभव के माध्यम से करके सीखने, संगठित उत्पादन कार्य में निहित भौतिक वस्तुओं और मानव के संबंध को समझने की आंतरिक दृष्टि विकसित करने के तरीकों को कक्षा-कक्ष में अनुप्रयोग करने पर ज़ोर दिया गया (रा.शै.अ.प्र.प., 1976, पृ. 4)।

बच्चे अपने आस-पास की दुनिया से बहुत ही सक्रिय रूप से जुड़े रहते हैं। वे खोजबीन करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, चीज़ों के साथ कार्य करते हैं, चीज़ें बनाते हैं और अर्थ गढ़ते हैं (*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, पृ. 14)। बच्चों के अनुभवों को पोषण प्रदान करने के लिए एक शिक्षक को किसी घटना का वर्णन, कक्षा-कक्ष के मित्रों से चर्चा, अपने अनुभवों की कहानी कहना, अभिनय मंचन, अंताक्षरी, प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित करना, वाद-विवाद, विभिन्न वाद्य-यंत्र वादन एवं संगीत गायन प्रतियोगिता इत्यादि कार्यक्रमों का आयोजन करवाना चाहिए। ताकि स्वयं से सीखने, अधिकतम से प्रेरणा लेने और रुचियों को विकसित करने की गतिविधियों को पोषित किया जा सके। ये सभी कार्य बच्चों में विभिन्न कौशल यथा सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के साथ-साथ उनकी रचनात्मक क्षमताओं का विकास करने में सहायक हैं।

## बच्चों हेतु स्वयं के अनुभवों से सीखने का माहौल तैयार करना

ड्यूवी के अनुसार बच्चे विद्यालय में स्वयं के अनुभवों की उच्चतम पहुँच से सीखते हैं न कि उन विशिष्ट चीज़ों से जो कि कक्षा-कक्ष में पढ़ाई जा रही हैं। वे उससे सीखते हैं कि वे क्या पढ़ रहे हैं? कैसे पढ़ रहे हैं? उन्हें कौन पढ़ा रहा है? और उनके साथ कैसा व्यवहार किया जा रहा है (सिंगर व अन्य, 2003, पृ. 8)।

### *शिक्षक की तैयारी*

मनोविज्ञान का ज्ञाता, विषय-वस्तु का जानकार, पाठ योजना का निर्माण, शिक्षण सहायक सामग्री (चॉर्ट, मॉडल, प्रयोग की सामग्री आदि), अंत:क्रिया को जीवंत बनाने हेतु अधिक से अधिक दैनिक जीवन से जुड़े उदाहरणों का प्रयोग आदि की तैयारी, बच्चों के पूर्व ज्ञान, क्षमताओं, योग्यताओं, रुचियों, अभिवृत्तियों और मनोदशाओं को ध्यान में रखकर की जानी चाहिए।

### *कक्षा-कक्ष की तैयारी*

बच्चों के बैठने की व्यवस्था, कक्षा-कक्ष का वातावरण यथा खुला व हवादार, बाहरी शोरगुल से मुक्त, आवश्यक शिक्षण सामग्री की उपलब्धता एवं उपयुक्तता आदि की तैयारी हेतु विद्यालय प्रशासन के साथ-साथ अभिभावकों को भी सहयोग देने और ध्यान देने की आवश्यकता है।

## बच्चों की जीवन कौशलों हेतु तैयारी

बचपन विकास और निरंतर बदलाव की अवस्था है, जिसमें शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं का पूर्ण विकास शामिल होता है। इस विकास में वयस्क समाज में समाजीकृत होना भी शामिल है, जिसमें बच्चा संसार का ज्ञान ग्रहण करता है और नए ज्ञान का सृजन भी करता है। बच्चा अपने आप को दूसरों से जोड़कर देखना सीखता है, जिससे उसकी समझ बनती है, वह कार्य कर पाता है और रूपांतरण कर पाता है (*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, पृ. 14)। ऐसे में यूनिसेफ़ ने डेलर्स कमीशन की 1996 की रिपोर्ट के चार स्तंभों यथा ज्ञान लेने के लिए (learning to know), उपयोग के लिए (learning to do), अपने अस्तित्व के लिए (learning to be) और साहचर्यपूर्ण जीवन जीना सीखने के लिए (learning to live together) पर आधारित बच्चों को जीवनोपयोगी बुनियादी जीवन कौशलों (key life skills) में प्रशिक्षित करने हेतु सुझाव दिए हैं। ये बुनियादी जीवन कौशल (यूनिसेफ़, 2015) निम्नलिखित हैं —

### *ज्ञान लेने के लिए*

- समस्या समाधान (problem solving)
- समालोचनात्मक चिंतन (critical thinking)
- रचनात्मकता (creativity)
- विश्लेषणात्मक कौशल (analytical skill)
- श्रवण कौशल (listening skill)
- अति-संज्ञानात्मक कौशल (metacognitive skill)
- संप्रेषण कौशल (communication skill)
- उत्सुकता (curiosity)

- सहकार्य (teamwork)
- तर्क कौशल (reasoning skill)
- प्रश्न कौशल (questioning skill)

***उपयोग के लिए***

- समझौतापूर्ण व्यवहार का कौशल (negotiation skill)
- स्व-अधिगम के प्रबंधन का कौशल (skill to manage own learning)
- स्व-जागरुकता (self-awareness)
- तनाव का सामना करना (coping with stress)
- मनोभावों के साथ तालमेल बिठाना (coping with emotions)
- पहल करना (talking initiatives)
- व्यवहार में लचीलापन (resilience)
- अपनी बात रखने का कौशल (presentation skill)
- दिशा-निर्देश देने का कौशल (orientation skill)
- संगठन करने का कौशल (skill of organisation)

***अपने अस्तित्व के लिए***

- स्व-नियंत्रण (self-control)
- आत्म-सम्मान (self-esteem)
- आत्म-विश्वास (self-confidence)
- निर्णय-निर्माण (decision-making)
- समानुभूति (empathy)
- अनुकूलता (adaptability)
- प्रेरणा (motivation)
- दृढ़ता (perseverance)
- सहयोग (collaboration)

***साहचर्य पूर्ण जीवन जीना सीखने के लिए***

- समता (equity)
- विविधता (diversity)
- स्वतंत्रता (freedom)
- एकजुटता (solidarity)
- ज़िम्मेदारी (responsibility)
- सहनशीलता (tolerance)
- भेदभाव रहित (non-discrimination)
- सामाजिक न्याय (social justice)
- सहभागिता (participation)
- पारदर्शिता (transparency)
- स्वीकार्यता (acceptance)

## निष्कर्ष

शिक्षा, कोई भौतिक वस्तु नहीं है, जिसे शिक्षक या डाक के ज़रिए कहीं पहुँचा दिया जा सके। उर्वर और ऊर्जादायी शिक्षा की जड़ें हमेशा ही बच्चे की भौतिक और सांस्कृतिक ज़मीन में गहरे पैठ रखती हैं और उन्हें माता-पिता, शिक्षकों, सहपाठियों और समुदायों के साथ पारस्परिक क्रियाओं से पोषण मिलता है। इस दायित्व के संदर्भ में शिक्षकों की भूमिका और प्रतिष्ठा को रेखांकित करने और सुदृढ़ करने की ज़रूरत है (*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*, पृ. iii–iv)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य बच्चों को कक्षा-कक्ष में अपने

स्वयं के परिवेश से प्राप्त अनुभवों के अनुप्रयोगों का अवसर प्रदान करना है। ऐसे अधिकाधिक अवसरों से बच्चों में कार्यों को सही ढंग से करने एवं एक ही कार्य को अन्य कई नए तरीकों से करने संबंधी खोजपूर्ण चिंतन की अभिवृत्ति विकसित होगी, जो बच्चों में आत्म-ज्ञान (self-knowledge) को जागृत करने के लिए प्रेरणा का कार्य करेगी। जॉन ड्यूवी का विचार है कि शिक्षा और अनुभव के बीच जैविक संबंध है, जिसके कारण किसी भी विषय का प्रभावी शिक्षक विद्यार्थियों के मौजूदा अनुभव से जुड़ने में सक्षम है और वे शिक्षक नए अनुभवों के साथ विद्यार्थियों के जीवन को विस्तृत और समृद्ध कर सकते हैं (सिंगर और अन्य, 2003, पृ. 8)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी यह स्पष्ट किया गया है कि वैयक्तिक अंतरों को स्वीकार कर प्रत्येक बच्चे को स्वयं की क्षमताओं और कौशलों के आधार पर विकसित होने हेतु संगीत, नृत्य, कला, अभिनय, साहित्य अथवा उसके स्वरुचि क्षेत्र में अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराने हेतु शिक्षकों द्वारा प्रयास किए जाएँ।

## सदंर्भ


ड्यूवी, जॉन. 1915. *द स्कूल एंड सोसाइटी*. द्वितीय संस्करण. पृ. 15. द यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, शिकागो.

डेलर्स, जेक्स. 1996. *लर्निंग — द ट्रेजर विदिन*. यूनेस्को, पेरिस.

पियाजे, जीन. 1952. *द ओरिजिन ऑफ़ इंटेलिजेंस इन चिल्ड्रन* (एम. कुक, अनुवादक). इंटरनेशनल यूनिवर्सिटीज़ प्रेस, न्यूयॉर्क. https://www.pitt.edu/~strauss/origins_r.pdf. पर देखा गया।

मसॉ, डी. 1979. *स्कूल्ड टू ऑर्डर — ए सोशल हिस्ट्री ऑफ़ पब्लिक स्कूलिंग इन द यूनाइटेड स्टेट्स*. पृ. 4. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क.

मैकलौर, एम. 2003. *डिस्कोर्स इन एजुकेशनल एंड सोशल रिसर्च*. ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस, बकिंघम.

यूनिसेफ़. 2015. *मेना एजुकेशन नेटवर्क (मेड-नेट) मीटिंग रिपोर्ट*. यूनिसेफ़ मिडिल ईस्ट एंड नार्थ अफ्रीका, अम्मान. http://www.oosci-mena.org/uploads/1/wysiwyg/MEdNet_Meeting_Report_-_Final.pdf पर देखा गया।

रा.शै.अ.प्र.प. 1976. *दस वर्षीय स्कूल के लिए पाठ्यक्रम — एक रूपरेखा*. पृ.1, 4. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

____. 2000. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

____. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. पृ. iii–iv, vii–x, 1, 14. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

____. 2008. *राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र — पाठ्यचर्या बदलाव के लिए व्यवस्थागत सुधार*. पृ. vi, 3–4, 24, 28. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

____. 2009. *राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र — शैक्षिक तकनीकी*. पृ. 3. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

वायगोत्स्की, एल. एस. 1962. *थॉट एंड लैंग्वेज*. कैंब्रिज, पृ.सं. xxiv. एम.आई.टी. प्रेस, मैसाचुसेट्स.

शालेंबर्गर, डी. 2015. फ्रंटियर लर्निंग फ्रॉम अवर मिस्टेक्स — इंटरनेशनल एजुकेटर्स रिफ़्लेक्ट. द *इंटरडिसिप्लिनरी जर्नल ऑफ़ स्टडी अब्रॉड*. XXVI, 248. https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1084537.pdf. पर देखा गया।

सिंगर, ए. जे., एम. मर्फ़ी और एस. एम. हायिन्स. 2003. *टीचिंग टू लर्न, लर्निंग टू टीच*. पृ. 3, 8. लौरेंस एल्बौम एसोसिएट्स, पब्लिशर्स, माह्वाह, न्यू जर्सी.

होप्पिट, विलियम जे. ई., गिलियन आर. ब्राउन, रचेल केंडल, ल्यूक रेंडेल, एल. थोर्नटन, माइक एम. वेब्स्टर और एन. केविन लालैंड. 2008. लेसंस फ्रॉम एनिमल टीचिंग. *ट्रेंड्स इन इकोलॉजी एंड इवोल्यूशन*. 30(3), 1–8.

होल्ट, जॉन. 1995. *हाऊ चिल्ड्रन लर्न*. डॉ. केपो प्रेस, रीडिंग, मैसाचुसेट्स.